नन्ही राजकुमारी और
हज़ार पक्षी
कहानी 12 वर्षीय
लड़की सदाको सुसुकी की,
जिसकी मृत्यु हिरोशिमा
पर गिरे अणु
बम के 10 वर्षों पश्चात्
रेडियोधर्मिता–जनित
ल्यूकेमिया के प्रभाव
से हुई ।
राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय
नई दिल्ली

नन्ही राजकुमारी और हज़ार पक्षी

कहानी 12 वर्षीय लड़की सदाको सुसुकी की,
जिसकी मृत्यु हिरोशिमा पर गिरे अणु बम के
10 वर्षों पश्चात् रेडियोधर्मिता-जनित
ल्यूकेमिया के प्रभाव से हुई।

राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय
नई दिल्ली

अनुक्रमणिका

मूल फ्रांसीसी में लिखित रचना के लेखक : **पियेर मारशां**

अंग्रेजी अनुवाद : **करलीना पेरेज़**

हिन्दी अनुवाद : (वलियाम्माल संस्थान, गांधी संग्रहालय, मुदुराई-625020, द्वारा प्रकाशित अंग्रेज़ी अनुवाद पर आधारित), जनवरी, 1999
श्री हरीशचन्द्र पंत, डा. वाई. पी. आनन्द

(अंशदायी मूल्य रुपये 20/- मात्र)

प्रकाशक:
निदेशक,
राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय
राजघाट, नई दिल्ली - 110 002
टाईपसेटिंग : निधि लेज़र प्वाईट, दिल्ली - 110 032
दा क्रीएटर्स, दिल्ली - 110 002

दो वचन

यह कहानी है सदाको सुसुकी की, जो दो वर्ष की थी जब जापान के हिरोशिमा नगर पर, 6 अगस्त 1945 को, एटम बम की नरसंहार एवम् विनाश करने की क्षमता जानने के लिए इसे पहली बार गिराया गया था। वह अणु बम के तात्कालिक प्रभाव से तो बच गई किन्तु दस वर्षों के पश्चात् उसके शरीर में रेडियोएक्टीविटी जनित ल्यूकेमिया के लक्षण विकसित होने लगे और वह धीरे-धीरे मुर्झाती गयी और अन्ततः 25 अक्टूबर 1955 को उसकी मृत्यु हो गयी।

यह कहानी है स्कूल जाने वाली एक किशोरी सदाको सुसुकी की, जिसकी हिरोशिमा पर गिराये गये अणु बम के दस वर्षों पश्चात शनैः-शनैः हुई मौत हमें न्यूक्लिअर हथियारों की वास्तविकता बताती है—'जो पाशविक शक्ति का अन्तिम चरण है,'* 'मानव जाति के लिए एक निश्चित आत्महत्या है।'* आणविक शस्त्रों की लड़ाई में कोई विजेता नहीं हो सकता। विद्यमान आणविक शस्त्र मानव के अस्तित्व को पचासों बार मिटा देने के लिए काफी हैं। हिरोशिमा पर गिराया गया पहला अणु बम वास्तव में अमेरिका और जापान के मध्य लड़ाई का परिणाम नहीं था, बल्कि यह लड़ाई थी शैतान और मानव जाति के बीच।

यह कहानी है सदाको सुसुकी की, एक कहानी जो भावुकता और कारुणिकता से भरी है, एक कहानी जो कथन में इतनी सौम्य फिर भी इतनी निष्ठुर और भीषण चेतावनी से पूर्ण है। यदि ऐन फ्रैंक की कहानी नाज़ी (जर्मन) मानसिकता का चरम अभ्यारोपण है तो 'नन्ही

---

* महात्मा गांधी के शब्दों में

राजकुमारी और हज़ार पक्षी' की कहानी अणु बम की मानसिकता का है।

सदाको सुसुकी की यह कहानी प्रत्येक साक्षर बच्चे और बड़ों को पढ़नी चाहिए। यह हमें बड़े ही साधारण और प्रत्यक्ष रूप से यह बताती है कि आणविक हथियार आपसी युद्ध का हथियार नहीं वरन् मानवता के सर्वनाश का हथियार है। 'नन्ही राजकुमारी और हज़ार पक्षी' की इस कहानी को पढ़कर केवल पाशविक शक्तियों के वशीभूत एक पागल व्यक्ति ही आणविक हथियारों को किसी भी रूप में बनाये रखने का समर्थन करेगा।

हमें इस कहानी का तमिल-अंग्रेजी संस्करण, प्रो. एस. जयप्रकाशम्, निदेशक, वालियाम्माल संस्थान, गांधी संग्रहालय, मदुरै (तमिलनाडु) के सौजन्य से प्राप्त हुआ। हम प्रो. जयप्रकाशम् को अंग्रेजी एवं हिन्दी में इसे छापने की अनुमति देने के लिए अपना हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। हम इस कहानी का अंग्रेज़ी में पुर्नमुद्रण और इसका हिन्दी अनुवाद अलग-अलग प्रकाशित कर रहे हैं। ताकि सामान्य जनमानस के समक्ष आणविक अस्त्रों के इस संवेदनशील वक्तव्य को प्रस्तुत कर सकें।

डॉ. वाई. पी. आनन्द
निदेशक,
राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय
राजघाट, नई दिल्ली-110 002

नई दिल्ली
1-1-99

नन्ही राजकुमारी और हज़ार पक्षी

1. सौभाग्य के चिन्ह

उस नन्ही राजकुमारी में कुछ विशेषता थी, ऐसा लगता था मानो वह हवा की दोस्त है।

वह गर्मी की प्रातः कपड़े पहन कर अपनी दोस्त हवा से मिलने घर से बाहर निकली यह इरादा कर कि वह उसके साथ-साथ खूब दौड़ेगी, इतना दौड़ेगी कि थक कर चूर हो जाये।

उसकी माँ मज़ाक में कहती रहतीं कि नन्ही राजकुमारी ने तो चलने से पहले ही दौड़ना सीख लिया था।

उस दिन वह हवा के साथ दौड़ रही थी पर सिर के ऊपर चमकते हुए उस अगस्त महीने के सूरज की गर्मी से बेखबर थी जो लोगों की आँखों को चौंधिया रहा था। नन्ही राजकुमारी की आँखें सीधा आगे की ओर देख रही थीं।

उस दिन आकाश उस समुद्र की तरह नीला था जो अनन्त क्षितिज तक फैला रहता है। गहरे नीले आकाश में बादलों का नामो-निशान नहीं था, यह देख कर नन्ही राजकुमारी ने मन ही मन कहा यह तो बहुत अच्छा शगुन है। वह तो हर समय हर जगह अच्छे शगुन देखती रहती थी।

जब वह घर लौटी, उसने अपनी बहन और दो भाईयों को गहरी नींद में सोया हुआ पाया।

तब उसने अपने बड़े भाई को पुकारा, "जल्दी उठो, आज शान्ति दिवस है।" उस समय उसका भाई बिस्तर में पड़ा हुआ उबासियां ले रहा था। वह तो केवल सोते रहना चाहता था, बस। वह भी चौदह वर्ष के और लड़कों की तरह खाना खूब पसन्द करता था। इसलिए नाश्ते की खुशबू को सूंघते ही उठ खड़ा हुआ, न कि अपनी बहन के आग्रह पर।

नन्ही राजकुमारी ने समय बचाने के लिए अपने छोटे भाई की मदद की। छः वर्ष के बच्चे के लिए तो कपड़े पहनना भी बड़ा काम होता है। प्रायः वह तो यह भी भूल जाता था कि उसने अपनी कमीज़ और मोज़े कहां रख दिए।

इसके बाद नन्ही राजकुमारी ने शीघ्र ही बिस्तर ठीक किया। उसकी बहन ने जो नौ वर्ष की थी, साफ सफाई में उसकी मदद की।

फिर वह तूफान की गति से रसोई क़ी तरफ दौड़ पड़ी और बोली, "अरी माँ ! मैं रुक नहीं सकती। जल्दी नाश्ता तैयार करो ताकि हम कार्निवाल देखने जा सकें।" स्पष्ट था कि वह उस समय बहुत उत्तेजित थी।

उसकी माँ सब कुछ तैयार करने में व्यस्त थी। नन्ही राजकुमारी की बात सुनकर उसे आश्चर्य हुआ। वह बोली, "प्यारी बेटी, अब तुम बहुत बड़ी हो गयी हो और तुम्हें यह मालूम हो जाना चाहिए कि आज के विशेष दिवस का क्या महत्व है। तुम्हें तो यह मालूम है कि आज कार्निवाल नहीं है। अब तुम ग्यारह वर्ष की हो गई हो, इस उम्र में तुम्हें मालूम होना चाहिए कि आज शांति दिवस है। यह दिवस हर वर्ष मनाया जाता है और हमें इसे कभी भी भूलना नहीं चाहिए।"

नन्ही राजुकमारी के पिता दरवाज़े पर खड़े सारी बात सुन रहे थे। वे बोले, "यह बात ठीक है। आज से तुम इस दिवस को विशेष सम्मान दोगी। यह भी याद रखोगी कि इसी दिन तुम्हारी दादीजी का देहान्त हुआ था और मृत्यु के समय उन्हें बहुत तकलीफ हुई थी।"

अपनी उत्तेजना के कारण राजकुमारी परेशान थी, उसे इतनी घबराहट थी कि जब से उठी थी उसे चैन ही नहीं आ रहा था। डरते हुए उसने अपने पिता से कहा, "मैं दादीजी का बहुत सम्मान करती हूँ। उनकी आत्मा की शान्ति के लिए हर रोज़ सुबह प्रार्थना करती हूँ। फिर भी मैं आज बहुत खुश हूँ। मैं इतनी खुश हूँ कि.....।"

उसके पिता ने उत्तर में कहा, "ऐसा हो भी, पर अब यह प्रार्थना का समय है।"

घर में प्रार्थना की वेदी पर दादीजी का चित्र रखा हुआ था। सारा परिवार एक दायरे में उसके पास इकट्ठा हो गया। नन्ही राजकुमारी बड़ी सावधानी से अपनी आंखें ऊंची कर यह देखने लगी कि क्या उसकी दादीजी की आत्मा सचमुच पूजा की वेदी के ऊपर दिखाई देगी। किन्तु उसके पिता ने उसे धीरे से झिड़क दिया और नन्ही राज-कुमारी ने अपने परिवार के दूसरे लोगों की तरह अपना सिर झुका लिया।

उसके पिता ने तब ऊंची आवाज़ में दिवंगत लोगों की आत्मा की शांति

के लिए प्रार्थना की जिनकी पहले मृत्यु हो गई थी। साथ ही उन्होंने अपने व्यवसाय के लिए और अपने चार बच्चों के लिए आभार प्रकट किया। अन्त में उन्होंने प्रार्थना की कि उनका परिवार उस भयंकर बीमारी से बचा रहे जिसने उस नगर के अनेक परिवारों को उत्पीड़ित किया था। उस नगर में पिछले नौ वर्षों से ल्यूकेमिया (अतिश्वेतरक्तता) के रोग से लोगों की मृत्यु हो रही थी। वह दिन तबसे हर वर्ष 'शांति दिवस' के नाम से याद किया जाता था।

प्रार्थना के अन्त होते ही नन्ही राजकुमारी ने नाश्ता किया। उसका भाई उन छोटी लड़कियों के बारे में, जो बड़े-बड़े अजगरों के समान खाती हैं, टिप्पणी कर रहा था। नन्ही राजकुमारी तो पिछले वर्ष के मेले के विषय में सोच रही थी : एक विशाल भीड़, संगीत और आतिश-बाज़ी।

उसने सबसे पहले ही नाश्ता पूरा कर लिया था। वह इतनी तेज़ी से मेज़ से उठी कि लगा बस अब मेज़ से टकराएगी। वह अपनी उम्र की तुलना में अधिक लम्बी थी, और उसकी लम्बी टांगे चलने के लिए सदैव तैयार रहती थीं। उसने अपनी बहन से नाश्ते के बर्तनों को उठाने में सहायता करने को कहा ताकि वह वहां से जल्दी जा सके।

जैसे ही रसोई से सामान उठ गया, नन्ही राजकुमारी दरवाज़े पर पहुँच गई, अब तो वह और भी अधिक बेचैन थी।

"हम साढ़े सात से पहले नहीं निकलेंगे," उसकी माँ ने धीरे से उसे याद दिलाया, "अतः बैठ जाओ।"

उसके माता पिता कभी जल्दी में नहीं होते थे। जैसे ही वह बैठने जा रही थी, एक मकड़ी कमरे के बीच से गुज़री। नन्ही राजकुमारी के अनुसार यह एक और अच्छा शगुन था। उसे और भी निश्चय हो गया कि आज का दिन बहुत अच्छा रहेगा। उसने मकड़ी को कोमलता से हाथ में लिया और उसे बाहर छोड़ दिया।

उसके भाई ने फिर थोड़ा उसका मजाक उड़ाते हुए कहा, "मकड़ियाँ अच्छा शगुन नहीं होती, देख लेना।" उसने खुशी-खुशी उत्तर दिया, "तुम इन्तजार करो और फिर देखो।"

2. शान्ति दिवस

जब वह परिवार घर से चला तो हवा में गर्मी थी और सड़क पर धूल के कण नाच रहे थे। नन्ही राजकुमारी अपनी सर्वप्रिय सहेली के घर दौड़ कर जा पहुंची। दोनों में छोटी कक्षा से बहुत ही गहरी और असीम दोस्ती थी। नन्ही राजकुमारी को अपनी सहेली से इतना प्यार था कि उसे विश्वास था कि दोनों सदैव एक दूसरे के बहुत पास रहेंगी।

उसकी सहेली उससे कुछ कदम आगे चल रही थी। फिर दोनों दौड़ने लगी, यह उनका पहला खेल होता था। नन्ही राजकुमारी ने अपनी सहेली से कहा, "कछुए के समान मेरे पीछे मत रहो, तेज़ दौड़ो, नहीं तो हम मेला नहीं देख पाएंगे।"

उसकी माँ ने ज़ोर से पुकारा, "धीमे हो जाओ, गर्मी में इतना तेज़ दौड़ना ठीक नहीं है।" किन्तु यह अब सम्भव नहीं था, दोनों लड़कियों में दौड़ शुरू हो चुकी थी और दोनों इतनी आगे निकल गई थीं कि माँ की आवाज़ सुन नहीं सकती थीं।

उसकी माँ ने तब कहा, "वह प्रथम आने के लिए इतनी अटल है कि किसी की बात सुनने के लिए भी नहीं रुकती।" इस पर उसके पिता हँस पड़े और बोले, "क्या तुमने उसे कभी चलते हुए देखा है जब वह दौड़ अथवा कूद सकती है ?"

बड़े पार्क के दरवाज़े पर लोग पहले ही क़तार में शान्तिपूर्वक खड़े हो रहे थे। दीवारों पर लगाए हुए बड़े चित्र लोगों को उस दिन की याद दिला रहे थे जब वह नगर कुछ ही क्षणों में एक चमक के साथ एक वीरान मरूस्थल में बदल गया था।

किन्तु नन्ही राजकुमारी उन चित्रों को देखना नहीं चाहती थी, उसे उनसे भय लगता था। उसे वह दिन अच्छी प्रकार से याद था जब, जैसा कि उसने अपनी प्रिय सहेली से कहा था, "उसने एक हज़ार सूरज देखे थे, उनकी किरणें इतनी तीखी थीं कि ऐसे लगा जैसे उसकी आंखों में सुईयां चुभ रही हों।"

उसकी सहेली को आश्चर्य होता था कि उसे सब इतनी अच्छी प्रकार याद था, "तुम तो बहुत छोटी थी, तुम्हें वह सब कैसे याद रह सकता है ?" वह उत्तर में बोली, "हाँ मैं छोटी थी पर मुझे सब याद है।"

प्रार्थना और मेयर के भाषण के पश्चात् हज़ारों सफेद कबूतर पिंजरों में से खुले छोड़ दिए गए। उन कबूतरों को देखकर नन्ही राजकुमारी को लगा कि वे वास्तव में मृत आत्माएं थीं जो अब आकाश में मुक्त होकर नाच रही थीं।

शांति दिवस की कार्यवाही अब समाप्त हो गई थी। नन्ही राजकुमारी भीड़ को छोड़ कर मिठाई वाले के पास दौड़ कर जा पहुँची। वहां उसे लगा कि इस वर्ष की मिठाई पिछले वर्ष की मिठाई से भी अधिक अच्छी थी।

हमेशा की तरह वह दिन भी बहुत जल्दी गुज़र गया। नन्ही राजकुमारी के लिए उस दिन का सबसे अच्छा क्षण वह था जब उसने देखा कि वहां खरीदने के लिए एक से एक अलौकिक चीज़ें मौजूद थीं, और रेस्तरांओं से स्वादिष्ट भोजन की सुगन्धें आ रही थीं। मुँह पर घावों के निशान वाले सब लोगों को देखकर वह अत्यधिक उदास हो जाती। कुछ के चेहरे तो इतने बिगड़ गए थे कि नन्ही राजकुमारी के लिए उनकी ओर देखना भी कठिन था। यदि ऐसा कोई व्यक्ति उसके पास आ जाता तो वह जितनी जल्दी हो सके अपना मुँह दूसरी ओर फेर लेती थी।

हर ग्रीष्म ऋतु की संध्या के समान अब सूरज डूब रहा था। किन्तु उस संध्या में जैसे ही सूरज धुंधला हो गया, नन्ही राजकुमारी के दिल में उथल-पुथल होने लगी। इसी क्षण का तो उसे उत्सुकता से इन्तज़ार था। उस रात के अंधेरे आकाश में हज़ारों आतिशबाज़ियों की रंगीन रोशनी से बच्चों के चेहरों पर चमक थी। और जब अन्तिम लौ भी बुझ गई तो लोग नदी की ओर काग़ज़ की कन्दीलें लिए चल दिए।

तब राजुकमारी ने देखा, उसके पिता ने छः मोमबत्तियां जलाईं और उन्हें सावधानी-पूर्वक काग़ज़ की छः कन्दीलों में रख दिया। हर कन्दील में परिवार के उस सदस्य का नाम लिखा था जिसकी मृत्यु "हज़ार सूरज वाले" दिन हुई थी। जब उन कन्दीलों में मोमबत्तियों की लौ चमकने लगी, उन्हें नदी के बीच छोड़ दिया गया। कन्दीलों की एक सीधी लम्बी क़तार समुद्र की ओर बढ़ रही थी, इसे देख बच्चे प्रसन्न हो गए।

वह शान्ति दिवस का अन्तिम क्षण था, कार्निवाल (मेले) का अन्तिम क्षण। उस रात राजकुमारी को कुछ देर बाद नींद आई। उसने उस दिन जो कुछ भी देखा था, उसे वह याद करना चाहती थी। उसने इस बात का भरसक प्रयत्न किया कि उसे जल्दी नींद नहीं आए। उसने मन ही मन कहा

कि उसके भाई की बात ग़लत निकली थी। मकड़ियाँ तो सौभाग्य का लक्षण होती हैं। अगले दिन वह अपने भाई को यह बताना कभी नहीं भूलेगी।......

3. एक रहस्य

पेड़ों की पत्तियों का रंग देख कर हर व्यक्ति बता सकता था कि पतझड़ का मौसम आ रहा है। नन्ही राजकुमारी दौड़कर घर आ पहुँची, उसके पास सुनाने के लिए एक खुशी की सूचना थी। उसने बड़े कमरे में अपने जूते उतारे और दरवाज़ा थोड़ा खोलते हुए कहा, "मैं धर आ गई हूँ।"

उसकी माँ रसोई में संध्या का भोजन तैयार कर रही थी। "आज एक कमाल की बात हो गई, अनुमान लगाओ क्या बात हुई होगी!"

उसकी माँ ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया, "तुम्हारे साथ तो कितनी ही कमाल की बातें होती हैं। अब क्या हुआ होगा, कैसे कहूं।"

"बड़ी दौड़! खेल मेला! मैं रिले दौड़ की टीम में चुन ली गई हूँ।"

नन्ही राजकुमारी अपना स्कूल बैग घुमाते हुए सारे कमरे में नाच रही थी। फिर वह बोली, "ज़रा सोचो, अगर हम दौड़ में जीत गए तो अगले वर्ष मेरा चयन कालेज की टीम में अवश्य हो जाएगा!" और यही उसका सब से बड़ा स्वप्न था।

संध्या के भोज के समय उसके पिता ने बहुत देर तक अपने परिवार के गौरव के विषय में बताया। नन्ही राजकुमारी अपने पिता के द्वारा परिवार के गौरव की बात को सुनने में इतनी मस्त हो गई कि वह भोजन करना भी भूल गई। उसका भाई भी अपने पिता की बात को सुन कर बहुत प्रभावित हो गया। वह चुपचाप बैठी दौड़ के स्वप्न देखती रही।

उस दिन से उसके सामने बस एक ही लक्ष्य था, रिले दौड़ में जीतना। प्रति दिन वह स्कूल में अभ्यास करती थी और स्कूल से घर तक सारे रास्ते दौड़ कर जाती थी।

एक दिन उसने अपने भाई के साथ दौड़ का मुकाबला कर उसे भी पराजित कर दिया। उसके पिता ने उस दौड़ का समय मापन किया था। दौड़ में उसकी तेज़ी को देख कर हर कोई आश्चर्य चकित हो जाता था। वह अब सोचने लगी थी कि शायद स्कूल में वह सबसे तेज़ दौड़ती थी।

अन्ततः वह महान् दिन आ ही गया जब बच्चों के माता-पिता, सगे

संबंधी और मित्र स्कूल में जमा हो गए थे। वे खुश थे और ऐसे अवसर को खोना नहीं चाहते थे। नन्ही राजकुमारी तो इतनी बेचैन थी कि उसे लगा था कि उसकी टांगें काम नहीं करेंगी। उसे यह भी लग रहा था कि दूसरे सब बच्चों की टांगें कितनी लम्बी और मजबूत थीं।

उससे नहीं रहा गया और उसने अपनी माँ को वह सब बता दिया जो वह सोचने लगी थी। तब उसकी माँ ने कहा, "मेरी प्यारी नन्ही बेटी, चिन्ता का होना स्वाभाविक है पर मन को छोटा नहीं करना चाहिए। जब तुम दौड़ने लगो तो पूरी शक्ति लगा कर दौड़ना।"

अन्त में दौड़ आरम्भ होने का समय आ गया। उसके पिता ने कहा, "अपनी पूरी हिम्मत से दौड़ना और हम सबको तुम पर गौरव होगा।"

माता-पिता के शब्दों ने उसकी परेशानी दूर कर दी। वह सोच रही थी , "कुछ भी हो, मेरे माता-पिता मुझे प्यार करते हैं।"

दौड़ आरम्भ का इशारा पाते ही नन्ही राजकुमारी के मन में जो भी विचार थे वह हट गए और उसके सामने केवल दौड़ जीतने का लक्ष्य था। जब उसकी बारी आई तो वह अपनी पूरी शक्ति लगा कर तीर की मानिंद दौड़ पड़ी।

दौड़ समाप्त हो गई फिर भी उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। उसकी तबीयत पूरी ठीक नहीं थी और जीवन में पहली बार उसे चक्कर आ रहे थे। कोई चिल्लाया, "तुम्हारी टीम जीत गई है। " पर उसे यह बहुत धीमे से सुनाई दिया।

उसकी कक्षा के सभी बच्चों ने उसे घेर लिया, वे उसे गले लगा रहे थे और चिल्ला रहे थे। उसने अपना सिर थोड़ा घुमाया और चक्कर आने बन्द हो गये।

शरदऋतु में नन्ही राजकुमारी ने दौड़ना कभी बन्द नहीं किया, उसकी दौड़ क्रमशः बेहतर और उसकी गति तेज़ होती गई। उसने सोचा, यदि उसे कालेज की टीम में शामिल होना है तो हर रोज़ अभ्यास करना होगा। कभी-कभी, एक लम्बी दौड़ के बाद उसे चक्कर से आने लगते थे पर उसने यह निश्चय कर लिया था कि वह यह बात किसी को नहीं बताएगी और यह भेद अपने पास ही रखेगी।

उसने अपने को समझाया कि चक्कर आना कोई बहुत बड़ी बात नहीं

है, यह कोई खतरे की बात नहीं , यह शीघ्र ही टल जाएगा। पर उसे और भी अधिक चक्कर आने लगे। यद्यपि उसे उन से डर लगने लगा था पर नन्ही राजकुमारी ने यह बात अपने तक ही रखी, अपनी प्रियतम सहेली को भी नहीं बताई।

नव-वर्ष की संध्या पर नन्ही राजकुमारी को आशा थी कि उसे भविष्य में चक्कर नहीं आएंगे। कितना अच्छा होता यदि भविष्य में उसे रहस्य छिपाने की आवश्यकता न रहे। आधी रात जब वह गहरी नींद में सोई हुई थी, बारह बार घंटे की आवाज़ ने उसे जगा दिया। ये आवाज़ें पिछले वर्षों की बुरी आत्माओं को भगा देती थीं ताकि नए वर्ष का आरम्भ शुभ हो। हर आवाज़ पर नन्ही राजकुमारी ने अपनी अनमोल आकांक्षा का मनन किया.....कभी-कभी किसी भेद को छिपाना कितना कठिन होता है।

अगले दिन सुबह नन्ही राजकुमारी अपने परिवार के सदस्यों के साथ मंदिरों और पुण्य स्थलों में गई, और दर्शनार्थियों की भीड़ के साथ मिल गई। उसकी माँ ने अति सुन्दर वस्त्र पहन रखे थे। और उसने कहा, "जब हमारे पास कुछ पैसा हो जाएगा, मैं तुम्हारे लिए भी अपने जैसे ही सुन्दर वस्त्र खरीदूंगी। तुम्हारी उम्र की बच्ची के पास भी सुन्दर पोशाक होनी चाहिए।"

नन्ही राजकुमारी ने विनम्रता से अपनी माँ को धन्यवाद दिया पर उस समय उसे सुन्दर पोशाक की इच्छा नहीं थी। वह तो केवल एक ही बात सोच रही थी—कालेज की दौड़ की टीम में शामिल होने की।

नन्ही राजकुमारी उस खुशबाश भीड़ में शामिल होकर, अपने भेद को शीघ्र ही भूल गई। नए वर्ष की खुशियों में उसने अपनी परेशानियों को दूर भगा दिया। उस दिन संध्या के समय उसने अपने भाई को एक मुकाबले की दौड़ में बिना किसी प्रकार के चक्कर के आभास के आसानी से हरा दिया।

उस दिन उसके पिता ने घर के बाहरी दरवाज़े पर कुछ शुभ चिन्ह लटका दिए थे ताकि उनके परिवार में नव वर्ष में खुशियां छाई रहें।

जब आरंभ इतना अच्छा हो रहा था वह किसी भी बात से क्यों डरती?

4. रहस्य खुल गया

कई सप्ताह तक ऐसा लगा मानो प्रार्थना और शगुनों ने अपना उत्कृष्ट काम कर दिया है। नन्ही राजकुमारी को भी लग रहा था कि वह पूरी तरह से स्वस्थ

है और हर रोज़ दौड़ में उसकी गति बढ़ रही थी।

पर जाड़ों की एक सुबह फरवरी के महीने में सब कुछ समाप्त हो गया। नन्ही राजकुमारी स्कूल के खेल मैदान में दौड़ रही थी कि अचानक उसके इर्द-गिर्द सब कुछ घूमने लगा। वह ज़मीन पर गिर पड़ी। एक अध्यापिका उसकी सहायता के लिए दौड़ी।

"मैं...मुझे लगता है मैं, बहुत थक गई हूँ," राजकुमारी ने बहुत धीमी आवाज़ में कहा। उसने उठने की कोशिश की पर उसके पाँव लड़खड़ा गए और वह फिर गिर पड़ी। उसकी अध्यापिका बहुत चिन्तित हो गई और उसकी छोटी बहन को घर जाकर अपने पिता को सूचित करने को कहा।

नन्ही राजकुमारी के पिता सुनते ही स्कूल पहुंचे और उसे तुरन्त रेडक्रास अस्पताल ले गए। जब वे अस्पताल के बड़े बरामदे से गुज़र रहे थे तो नन्ही राजकुमारी को अचानक डर लगने लगा। उस अस्पताल में एक आरक्षित कक्ष था जिसमें "हज़ार सूरजों के दिन" के बाद हुए बीमार लोगों को रखा जाता था।

कुछ ही क्षणों में एक नर्स ने एक कमरे में नन्ही राजकुमारी के खून का नमूना लिया। उसके बाद उसकी छाती का एक्स-रे करने के लिए उसे ले गए। डॉक्टर ने उसकी पीठ में कई जगहों पर थप-थपाया और उससे अनेक सवाल किए। फिर तीन और डॉक्टर देखने आए। एक डाक्टर ने अपना सिर हिलाया और बड़े प्रेम से उसके महीन बालों पर हाथ फेरा।

उसके परिवार के अन्य सदस्य अब तक अस्पताल पहुंच चुके थे। उसके माता-पिता साथ वाले कमरे में थे जो डॉक्टर का कार्यकक्ष भी था। नन्ही राजकुमारी उनकी जानी पहचानी हुई धीमी आवाज़ों को भी सुन रही थी। अचानक उसने अपनी माँ की चीख को सुना "ल्यूकेमिया ! यह कैसे हो सकता है।"

ऐसा सुनते ही उसका खून थम गया। उसने अपने हाथ अपने कानों पर रख दिए ताकि आनेवाली आवाज़ों को नहीं सुन सके। उसे ल्यूकेमिया नहीं हो सकता था। उसकी माँ ठीक ही कहती थी, यह कतई संभव नहीं था।

नर्स नन्ही राजकुमारी को निगरानी-कक्ष से दूसरे कमरे में ले गई और वहां उसने उसे एक सूती पायजामा दिया। जैसे ही नन्ही राजकुमारी चादर लेकर लेटने को तैयार हुई उसके परिवार-जन कमरे में दाखिल हुए।

उसकी माँ ने उसे अपनी बाहों में लेते हुए उसे दिलासा दिलाने का प्रयत्न करते हुए कहा, "तुम्हें अभी यहां कुछ समय रहना होगा, पर मैं हर संध्या को तुमसे मिलने आऊंगी।"

उसके बड़े भाई ने भी कहा, "हम भी स्कूल के बाद आएंगे।" उसके छोटे भाई और बहन ने भी उस स्तब्ध अवस्था में अपने सिर हिला दिए।

नन्ही राजकुमारी से नहीं रहा गया और उसने पिता से पूछ ही लिया, "क्या मुझे वास्तव में, हज़ार सूरजों वाली बीमारी हो गई है?"

वह अपने पिता की आंखों में गहरी निराशा की झलक को आसानी से भांप गई। किन्तु उसके पिता ने केवल यही उत्तर दिया, "डॉक्टर अभी कुछ और परीक्षण करना चाहते हैं।" वे चुप हो गए किन्तु फिर बोल पड़े, "लगता है वे तुम्हें यहाँ कुछ सप्ताह रखना चाहते हैं।"

"कुछ सप्ताह!" नन्ही राजकुमारी के लिए 'कुछ सप्ताह' का अर्थ था कुछ वर्ष। वह कालेज की प्रवेश परीक्षा से भी वंचित रह जाएगी। इससे बुरी बात तो यह होगी कि वह कालेज की दौड़ की टीम में भी शामिल नहीं हो सकेगी।

नन्ही राजकुमारी का गला रुन्ध गया, वह अपनी थूक भी हलक़ से नीचे नहीं उतार पा रही थी। किन्तु, उसने अपने आँसू रोकने की भरसक कोशिश की।

उसकी माँ ने प्यार से उसे अपनी बाहों में भरा, तकिए को ठीक किया और चादर बिस्तर पर बिछा दिया।

उसके पिता ने अपने भरे गले को साफ करते हुए कहा, "क्या....क्या तुम्हें किसी भी चीज़ की इच्छा है?"

नन्ही राजकुमारी ने धीरे से अपना सिर हिला दिया। उस समय तो उसे एक ही इच्छा थी अपने घर जाने की । पर कब? उसे अब लगा कि उसका पेट भी कसा जा रहा था। उसने सुन रखा था कि बहुत से लोग जो उस अस्पताल में आते थे, कभी घर नहीं लौट पाए।

तब नर्स उस कमरे में फिर दाखिल हुई और उसने उसके घरवालों से चले जाने के लिए कहा, यह कहते हुए कि नन्ही राजकुमारी को अकेला रहने की ज़रुरत थी ताकि वह आराम कर सके। जैसे ही कमरे का दरवाज़ा बन्द हुआ नन्ही राजकुमारी ने तकिए से अपना चेहरा ढक लिया और निरंतर रोने

लगी। आज पहली बार उसने अपने को इतना निराश, अकेला और इतना दयनीय महसूस किया था।

5. सुनहरी चिड़िया

अगले दिन सुबह वह धीरे-धीरे उठी जैसे कि वह एक भयानक सपना देख चुकी हो। वह अपने घर की रसोई में अपनी माँ द्वारा नाश्ता बनाने की जानी पहचानी आवाज़ों को सुनना चाहती थी किन्तु आज वह बिल्कुल नई आवाज़ें सुन रही थी, उस अस्पताल की असाधारण आवाज़ें।

वह चाहती तो यह थी कि बीता कल एक बुरा सपना ही हो। किन्तु नर्स के पहले इंजेक्शन लेकर आते ही सब कुछ वास्तविक बन गया। "इंजेक्शन लेना तो अस्पताल की दिनचर्या का आम भाग है। उसकी आदत हो जाएगी।"

नन्ही राजकुमारी ने उत्तर में कहा, "मैं तो केवल पुनः स्वस्थ हो जाना चाहती हूँ।"

सबसे पहले उसकी प्रिय सहेली दोपहर के समय उससे मिलने पहुँची। उसने अपनी पीठ के पीछे कुछ छिपाने का प्रयत्न करते हुए नन्ही राजकुमारी से रहस्यपूर्ण हँसी में कहा, "मैंने तुम्हारी बीमारी की दवा खोज ली है। आँखें बन्द करो।" जब उसकी सहेली को लगा कि नन्ही राजकुमारी ने अपनी आँखें सचमुच बन्द कर ली थीं तो उसने चुपचाप उसके बिस्तर पर कुछ काग़ज़ और एक कैंची रख दी, और बोली, "अब तुम देख सकती हो।" नन्ही राजकुमारी ने एक काग़ज़ को हाथों में लेकर कहा, "यह क्या है?"

नन्ही राजकुमारी की सहेली उस समय अपने आप से बहुत प्रसन्न थी, उसने राजकुमारी की उत्सुकता जगा दी थी। उसने गर्व से कहा, "तुम्हारी बीमारी को दूर करने के लिए मुझे एक युक्ति मिल गई है, मुझे ध्यान से देखो।" तब उसने सबसे सुन्दर सुनहरे काग़ज़ों में से एक का बड़ा चौकोर टुकड़ा काट लिया; कुछ ही क्षण में फिर उसे कई बार ऐसे मोड़ा कि वह एक सुन्दर सुनहरी चिड़िया में परिवर्तित हो गया।

नन्ही राजकुमारी को वह काग़ज़ की चिड़िया बहुत अद्‌भुत लगी पर वह सोचने लगी : "एक काग़ज़ की चिड़िया कैसे मेरे रोग को दूर कर सकेगी?"

तब उसकी सहेली ने कहा, "क्या तुम्हें काग़ज़ के पक्षियों वाली वह

पुरानी कहानी याद नहीं है? कहा जाता है कि कागज़ के ये पक्षी हजार वर्ष तक जीवित रहते हैं। यदि कोई बीमार व्यक्ति कागज़ के एक हज़ार पक्षी बना लेता है तो परमात्मा उसकी इच्छा पूरी कर उसकी बीमारी को दूर कर देते हैं।"

कागज़ की उस चिड़िया को दो हाथों में लेकर उसने उसे नन्ही राजकुमारी को दिया और कहा, "यह है तुम्हारी पहली चिड़िया।"

नन्ही राजकुमारी अपने आँसू नहीं रोक सकी। उसकी सहेली कितनी अच्छी थी कि उसने इतना सुन्दर उपहार दिया। विशेषत: जबकि वह यह बात अच्छी प्रकार जानती थी कि उसकी बीमार सहेली इस तरह की बच्चों की कहानी पर अब विश्वास नहीं करती थी। नन्ही राजकुमारी ने सुनहरी चिड़िया को अपने हाथों में लिया और अपनी मनोकामना सुनिश्चित कर ली। उसे छूते ही उसे अपने भीतर एक अत्यन्त उत्कृष्ट भाव का अनुभव हुआ। उसने मन ही मन कहा, "यह एक अच्छा लक्षण है, एक सौभाग्यपूर्ण लक्षण है।"

उसने बहुत धीमे स्वर में कहा, "धन्यवाद, मैं इस क्षण को कभी भी नहीं भूलूंगी।"

अब नन्ही राजकुमारी की बारी थी। उसने एक कागज़ उठाया, पहली बार एक चौकोर टुकड़ा काटा और उसे मोड़ने लगी। यह इतनी आसान बात नहीं थी जितना कि उसने सोचा था। उसकी सहेली ने उसे मोड़ देने का तरीका समझाया। नन्ही राजकुमारी ने जब कागज़ की दस चिड़ियां बना डालीं तो उसने उन्हें अपनी सहेली की सुनहरी चिड़िया के साथ मेज़ के ऊपर एक क़तार में सज़ा दिया। कुछ चिड़ियों की बनावट अजीब सी बनी थी, पर क्या हुआ....अभी तो वह सीख ही रही थी!

नन्ही राजकुमारी ने मुस्कुराते हुए कहा, "अब मुझे केवल नौ सौ नब्बे चिड़ियां बनानी बाकी हैं।" सुनहरी चिड़िया उसके पास ही होने के कारण उसका विश्वास और भी दृढ़ हो गया। उसने मन ही मन कहा वह कुछ सप्ताहों में एक हज़ार बना डालेगी और तब घर जाने योग्य हो जायेगी।

संध्या के समय उसका बड़ा भाई स्कूल से उसके लिए कुछ पढ़ाई का काम लाया। जब उसने कागज़ की उन चिड़ियों को देखा तो बोला, "इतनी सारी चिड़ियों के उड़ने के लिए इस छोटी मेज़ पर जगह कहाँ है? मै इन्हें एक

डोरी में बांध कर बाहर लटका देता हूँ......।''

नन्ही राजकुमारी अपनी मुस्कुराहट नहीं रोक सकी। उसने पूछा, ''क्या तुम वायदा करोगे, कि मेरी सारी चिड़ियां डोरी से बाँध कर बाहर लटका दोगे?''...उसके भाई ने तत्काल ऐसा करने का सच्चा वायदा किया।

नन्ही राजकुमारी ने शरारत से कहा, ''तुम जानते हो कि मैं एक हज़ार चिड़ियां बनाने जा रही हूँ''

''एक हज़ार? तुम अवश्य मज़ाक कर रही हो।''

राजकुमारी ने अपने भाई को पूरी कहानी सुनाई और कहा कि एक हज़ार चिड़ियां बनाने पर वह घर वापस जा सकेगी।

उसका बड़ा भाई मुस्कुराया और प्यार से उसने उसके काले बालों पर हाथ फेरा। उसे मालूम था कि वह उससे बाज़ी ले गई थी। ''इस बार जीत तुम्हारी हुई। मैं तो करूँगा ही। मैं इन चिड़ियों को एक के बाद एक पहली से आखिरी तक, डोरी पर लटका दूंगा।'' इसके बाद उसने नर्स से एक डोरी ली और पहली दस चिड़ियों को उस पर लटका दिया। सुनहरी चिड़िया उस मेज़ पर अपनी सम्मानित जगह पर ही रखी रही।

खाना खाने के बाद, संध्या के समय उसके छोटे भाई और बहन की उसके पास आने की बारी थी अपने पिता के साथ उसे देखने आने की। उन्होंने कागज़ की उन चिड़ियों को देखा तो वे सब आश्चर्य करने लगे। यह सच था कि सुनहरी चिड़िया ने उनको सबसे अधिक प्रभावित किया था। किन्तु उसकी माँ को तो सबसे छोटी चिड़िया पसन्द थी जिसे नन्ही राजकुमारी ने हरे रंग के कागज़ से बनाया था। उसकी माँ ने कहा, ''मुझे तो यह सबसे अधिक पसन्द है क्योंकि इतनी छोटी चिड़िया बनाना अत्यधिक कठिन होता है।''

मुलाक़ात का समय समाप्त हो गया तो कमरे में फिर सूनापन भरने लगा। नन्ही राजकुमारी को लगा कि वह कितनी अकेली पड़ गई थी। उसने अपना एकाकीपन दूर करने के लिए कुछ और चिड़ियां बनाई।

''ग्यारह, जल्दी ही मैं अच्छी हो जाऊंगी। बारह, जल्दी ही में अच्छी हो जाऊंगी।...''

6. कैंजी

अब हर कोई नन्ही राजकुमारी के लिए काग़ज़ इकट्ठे करने लगा था। उसकी सहेली उसके स्कूल के साथियों द्वारा इकट्ठे किये जा रहे काग़ज़ ले आती और उसके पिता को भी जो काग़ज़ मिलता, ले आते। नर्स उसके लिए वह काग़ज़ भी रखने लगी जिनमें दवाईयां आती थी। और उसका बड़ा भाई अपने वायदे के अनुसार धैर्यपूर्वक हर चिड़िया को डोरी पर लटकाता था।

आने वाले महीनों में नन्ही राजकुमारी को कई बार लगा कि वह अब ठीक होने लगी थी। किन्तु डाक्टर का कहना था कि उसे अभी कुछ और समय अस्पताल में रुकना चाहिए। नन्ही राजकुमारी यह तो समझ चुकी थी कि उसे ल्यूकेमिया हो गया था पर उसे यह भी ज्ञात हो गया था कि कुछ लोग इस रोग से अच्छे हो गये थे। उसका यह अटल विश्वास था कि वह भी अच्छी हो जाएगी।

दिन भर नन्ही राजकुमारी व्यस्त रहती। स्कूल से मिला काम पूरा करती, अपने मित्रों को पत्र लिखती और मिलने वालों का मन खेलों और गीतों से बहलाती। संध्या के समय वह सतर्क हो काग़ज़ की चिड़ियां बनाती। अब तक उसने तीन सौ से अधिक चिड़ियां बना डाली थीं। उन सब को बहुत दक्षतापूर्वक मोड़ा गया था। उसकी अंगुलियां बिना कोई भी गलती किए अब तेज़ी से काम करती, वैसे ही जैसे कि दौड़ते समय पहले उसकी टांगे भागा करती थीं....।

किन्तु धीरे-धीरे रोग उसके शरीर को कमजोर करने लगा। उसे अब दर्द भी महसूस होने लगा था। कई बार भयंकर सिर दर्द होने के कारण उसे लिखना पढ़ना बन्द करना पड़ता था। फिर कई बार उसे ऐसा लगने लगता जैसे उसकी हड्डियाँ अंदर जल रही हों। और चक्कर आने से वह बेहोश होने लगती थी। किसी समय उसे इतनी कमज़ोरी, इतनी थकावट महसूस होने लगती कि वह कुछ भी नहीं कर पाती थी और वह अपने सोने के कमरे की खिड़की के पास चुपचाप बैठी रहती।. वह कभी-कभी अपनी सुनहरी चिड़िया को हाथ में लेकर वहां घंटों बैठी रहती।

उस दिन उसे विशेष थकान महसूस हुई जब नर्स उसे पहियेवाली कुर्सी में बैठाकर बरामदे में धूप संकने के लिए लाई थी। यह पहली बार था कि

उसकी भेंट अस्पताल के एक और बच्चे के साथ हुई। वह लड़का नौ वर्ष का था, किन्तु अपनी उम्र से बहुत छोटा लगता था। नन्ही राजकुमारी की आँखें उसे देखकर ताड़ती रह गईं और उसके छोटे से चेहरे और उसकी काली चमकती आंखों को देखकर फैल गईं।

अपना परिचय देते हुए वह बोली "हैलो।"

उत्तर मिलने में कोई देर नहीं लगी। वह धीमी और मंद आवाज में बोलता था। शीघ्र ही दोनों पुराने मित्रों की तरह वार्ता करने लगे थे। वह अस्पताल में लम्बे समय से था किन्तु उसे मिलने बहुत कम लोग आते थे। उसके माता-पिता की मृत्यु हो चुकी थी और वह एक बूढ़ी चाची के पास रहता था।

उसने बताया, "वह इतनी बूढ़ी है कि वह सप्ताह में केवल एक बार मिलने आ पाती है, इसलिए मैं अपना अधिकतर समय पढ़ने में ही गुज़ारता हूं।"

नन्ही राजकुमारी ने अपने नये मित्र की ओर से दृष्टि हटा ली थी, पर वह बोले जा रहा था, "कोई बात नहीं, क्योंकि मुझे ल्यूकेमिया हुआ है और मुझे शीघ्र ही मर तो जाना ही है।"

नन्ही राजकुमारी ने तब कहा, "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। तुम्हें ल्यूकेमिया कैसे हो सकता है, तुम्हारा जन्म तो 'हज़ार सूरजों वाले दिन' के बाद हुआ था।"

लड़के ने उत्तर दिया, "यह आवश्यक नहीं है। यह रोग मेरी माँ को हो गया था और उसके द्वारा यह उसके मरने से पहले ही मुझे हो गया था...।"

नन्ही राजकुमारी को कोई जवाब नहीं सूझा। वह उसे दिलासा देना चाहती थी, उसमें आशा जगाना चाहती थीं। फिर उसे काग़ज़ की चिड़ियों की याद आ गई और अपने इस विचार से उत्तेजित हो उसने कहा, "तुम मेरी तरह काग़ज़ की चिड़िया क्यों नहीं बनाते। इससे ही शायद एक चमत्कार हो जाए।"

उसने शान्ति पूर्वक उत्तर दिया, "मुझे काग़ज़ की चिड़ियों की कहानी मालूम है। मैं इसे पहले ही सुन चुका हूँ। किन्तु अब तो मेरे लिए बहुत देर हो गई है, अब तो ईश्वर भी मेरी सहायता नहीं कर सकते।"

उसी समय नर्स बरामदे से होकर वापिस आ गई। उसने कहा, "तुम इसके बारे में कैसे कुछ जान सकते हो!"

लड़के ने नर्स की ओर अपना चेहरा घुमाकर अद्‌भुत शालीनता से उत्तर दिया, “मुझे सब मालूम है। मैं अपने पलंग के पास लगे चार्ट को तो पढ़ ही सकता हूँ। मैं अपने रक्तकणों की संख्या कम होती देख सकता हूँ। हर रोज़......मेरा रोग क्रमशः बढ़ रहा है।”

नर्स का चेहरा लाल हो गया। “बेकार की बात करके तुम अपने आपको केवल थका रहे हो।”

अपने अकेले कमरे में वापिस आने पर नन्ही राजकुमारी विचारों में खो गई। वह अपने आप में सोचती रही कि इतने बीमार व्यक्ति का यदि कोई परिवार न हो, तो उसे कैसा लगता होगा। उसने अपने सबसे सुन्दर काग़ज़ से एक नई चिड़िया बनाई और उसे अपने मित्र के कमरे में भेज दिया। वह सोच रही थी, हो सकता है यह उसके लिए कुछ सौभाग्य लाए। फिर वह चिड़ियां बनाती रही।

तीन सौ अठानवे.........

तीन सौ निन्यानवे..........

एक दिन उसका मित्र बरामदे में नहीं आया। उसी रात देर में नन्ही राजकुमारी ने अस्पताल के बरामदे में एक खाट को धकेलकर ले जाने की आवाज़ सुनी। नर्स अन्दर आई और उसे बताया कि उसके मित्र की मृत्यु हो गई थी। नन्ही राजकुमारी ने दीवार की ओर अपना मुँह कर लिया, और जिनको वह इतने समय तक रोके हुए थी, अब उन आँसुओं को रोकने की कोई कोशिश नहीं की। वे अब वर्षा की झड़ी की तरह बह रहे थे।

आंसुओं के आते ही नन्ही राजकुमारी को अपने कन्धे पर नर्स के हाथ का आभास हुआ। रात के सन्नाटे में दो अकेले प्राणी वहाँ इकट्ठे मौजूद थे। नर्स ने उसे सुझाया, “खिड़की के पास चली आओ, हम बातें करेंगे।”

जब अन्तिम आंसू बह गया उसने खिड़की से बाहर झांका और सितारों से भरपूर आकाश को देखा। नर्स ने उससे पूछा, “क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि हमारा मित्र वहां है, उनमें से एक सितारे पर? मुझे विश्वास है कि वह अब जहां कही भी है, खुश है। उसने अपने बीमार शरीर को त्याग दिया है और उसकी आत्मा स्वतंत्र है।”

नन्ही राजकुमारी सुनती रही पर उसके मुंह से कोई आवाज़ नहीं निकली। फिर मौन तोड़ते हुए से स्वर में उसने कहा, “अगली बारी मरने की मेरी है, है ना?”

नर्स चिल्लाई, आस्थापूर्ण सिर हिलाती हुई, "नहीं, नहीं ।" उसने राजकुमारी के बिस्तर पर कुछ रंगीन काग़ज़ रख दिए और बोली, "सोने से पहले मुझे अपनी चिड़ियां बनाने की विधि बताना। जब तुम एक हज़ार चिड़ियां बना लोगी तुम दीर्घकाल तक जिओगी, एक बहुत वृद्ध औरत की तरह।"

नन्ही राजकुमारी ने नर्स की बात पर विश्वास करने की कोशिश की। उसने पूरे ध्यान से दो और चिड़ियां बनाईं, हर चिड़िया के बन जाने पर अपनी वही मन्नत मांगते हुए।

चार सौ तिरेसठ.........

चार सौ चौंसठ.........

7. सैकड़ों इच्छाएं

जून का महीना आ गया, अपने वर्षापूर्ण लम्बे दिनों के साथ। बादलों से आकाश दिन भर घिरा रहा और वर्षा खिड़कियों के शीशों पर पड़ती रही। शीघ्र ही चारों तरफ नमी की गन्ध फैल गई।

नन्ही राजकुमारी बड़ी तो हो रही थी किन्तु वह बहुत पीली और क्षीण हो गयी थी। अब केवल उसके माता-पिता और बड़े भाई को उससे मिलने की अनुमति थी। उसकी कक्षा के बच्चों ने लकड़ी से बनी एक बहुत सुन्दर गुड़िया उसके पास भेजी, सुनहरी चिड़िया के बाद उसके पास अब यह दूसरा सौभाग्य चिन्ह था।

उसकी माँ चिन्तित थी क्योंकि अब उसकी खुराक वस्तुतः कम होती जा रही थी। एक दिन उसकी माँ उसके लिए अचानक एक विशेष पैकेट में लपेटा हुआ एक उपहार ले आई। इस पैकेट में नन्ही राजकुमारी के पसन्द के सभी पकवान रखे हुए थे। उसने पूरी ताकत से उठने की कोशिश की, तकिये को पीठ से सधाकर वह सीधे बैठ गई। किन्तु जब उसने उन पकवानों को खाने की कोशिश की, वह खा न सकी।उसने अन्ततः उन तश्तरियों को हटा दिया। उसने अपनी माँ का चेहरा बदलते देखा जब वह अपने आपको रोने से रोकने का प्रयत्न कर रही थी।

नन्ही राजकुमारी बोल उठी, "मेरी स्थिति एक कछुए के समान हो गई है।" उसे स्वयं बहुत दुख था कि उसने अपनी माँ को इतना शोकाकुल कर

दिया था। वह जानती थी कि उसका परिवार अमीर नहीं है और इतने बहुमूल्य पकवानों पर उनका कितना पैसा लगा होगा। वह अपने आंसुओं को रोक नहीं सकी किन्तु उसने उन्हें तुरन्त पोंछ लिया।

उसकी माँ ने उसे अपनी बाहों में समेट कर प्यार से कहा, "दु:खी मत हो। जल्दी ही तुम अच्छी हो जाओगी। संभवत: जब सूरज फिर निकल आयेगा....।"

नन्ही राजकुमारी अपनी माँ के पास सटकर बैठ गई और उन कविताओं को सुनने लगी जो उसकी माँ पढ़ कर सुना रही थी। जब उसका भाई कमरे में दाखिल हुआ वह फिर शांत थी। उसने राजकुमारी के पकवानों को वहाँ से हटाते हुए उसे स्कूल के समाचार सुनाए। और जैसे ही द्वार खोल कर चलने लगा वह बोल पड़ा "अरे! मैं तो भूल ही गया। तुम्हारी बहन ने तुम्हारे लिए यह उपहार भेजा है।......" उसने अपनी जेब में हाथ डाला और चांदी-सा चमकीला एक बड़ा काग़ज़ निकाला। उसे नन्ही राजकुमारी को देते हुए उसने क़हा, "उसने यह काग़ज़ एक नई चिड़िया बनाने के लिए तुम्हें भेजा है।...."

नन्ही राजकुमारी ने उस काग़ज़ को सूंघते हुए कहा,"अरे! इस काग़ज से तो चाकलेट की सी गन्ध आ रही है! आशा है देवताओं को चाकलेट पसन्द होगा।" इस पर तीनों खिलखिला कर हँस पड़े। बहुत दिनों बाद आज पहली बार राजकुमारी हँसी थी। अवश्य ही यह सौभाग्य का लक्षण था। शायद चिड़ियों का जादू अब काम करने लगा था?

उसने उस काग़ज़ को मोड़ा और एक बहुत सुन्दर चांदी सी चमकती चिड़िया बना डाली।

पांच सौ इकतालीस......।

किन्तु वह अब इतनी थक गई थी कि दूसरी चिड़िया उस दिन नहीं बना सकी। वह लेट गई और प्राय: उसी क्षण सो गई। उसकी माँ कमरे से बाहर चली गई, एक कविता गुनगुनाते हुए जिसे उसने अनेकों बार अपनी बेटी को सुनाया था, "ओ स्वर्ग के पक्षियो, मेरी बच्ची को अपने पंखों से ढक लो!"

8. वे अन्तिम दिन

जुलाई के अन्त तक मौसम कुछ गर्म होने लगा था और धूप बढ़ने लगी थी। नन्ही राजकुमारी के स्वास्थ्य में अब काफी सुधार लगता था।

उसने अपने भाई से कहा, "मुझे हज़ार चिड़ियां बनानी थीं, आधी से अधिक बना चुकी हूं। लगता है कुछ ठीक ही हो रहा है।"

और वास्तव में ऐसा ही हो रहा था। उसे अब भूख लगने लगी थी और प्रतिदिन का दर्द भी कम था। डॉक्टर परिणाम से खुश था और उसका कहना था कि वह कुछ दिनों के लिए अस्पताल छोड़कर अपने घर जा सकती थी।

उस रात नन्ही राजकुमारी इतनी उत्तेजित थी कि उसे नींद ही नहीं आई। कुछ और चिड़ियां बनाईं ताकि जादू का प्रभाव जमा रहे।

छः सौ एक............

छः सौ दो...............

घर लौट आना बहुत सुखदायी था, विशेष कर वर्ष के एक बहुत बड़े त्यौहार के दिन। वह दिन था जब सारा देश उन मृत आत्माओं का स्वागत करता था जो उन सब से मिलने आती थीं जिन्हें वे पृथ्वी पर बहुत प्यार करती थीं।

घर को खूब सजाया गया था और मेज़ पर सुन्दर फूल रखे गये थे। नन्ही सुनहरी चिड़िया और बहुमूल्य गुड़िया भी शोभा बढ़ा रही थीं। रसोई में पक रहे पकवानों की सुगन्ध से घर भर गया था। पूजा के मंडप में मृत आत्माओं के लिए भोजन रख दिया गया था।

संध्या के समय नन्ही राजकुमारी ने देखा कि उसकी माँ घर के दरवाज़े पर दीपक जलाने के लिए बाहर गई ताकि मृत आत्माओं को अंधेरी रात में अपना रास्ता ढूंढ़ने में कोई दिक्कत न हो। शायद, पर किन्तु शायद ही, वह अब घर में ही रहेगी।

अगले कुछ दिनों में परिवार के सभी मित्र घर मिलने के लिए आए। जब सप्ताह खत्म होने को आया, नन्ही राजकुमारी को फिर दुर्बलता और थकान महसूस होने लगी। वह केवल चुपचाप बिस्तर पर बैठी रहती और अपने मेहमानों को देखती रहती।

उसके पिता ने कहा, "मेरी राजकुमारी अब कितनी सुन्दर लग रही है।

उसकी दादी यह देख कर अवश्य गर्व महसूस करेगी कि उसकी पोती कितनी सुन्दर कुमारी बन गई है।''

''तुम ऐसा क्यों कहते हो? मैं तो यही चाहती हूं हमारी बेटी फिर से पूरी तरह से स्वस्थ हो जाए।'' ऐसा कह कर उसकी माँ अपने आँसुओं को छिपाने के लिए रसोई में भाग गई।

नन्ही राजकुमारी सोचने लगी, ''मैं सब को दुखी कर रही हूँ।'' वह भी पहले जैसी ही स्वस्थ हो जाने की और अपनी माँ को फिर से प्रसन्न देखने की आशा कर रही थी।

उसके पिता ने जैसे कि उसके विचारों को भांप लिया हो, उससे कहा, ''चिन्ता न करो। रात भर गहरी नींद सोने के बाद तुम फिर पहले से अच्छा महसूस करोगी।''

किन्तु अगले दिन नन्ही राजकुमारी को अस्पताल लौटना पड़ा। पहली बार उसे अस्पताल के अपने शयन कक्ष में लौटना अधिक अच्छा लगा। अब प्रतिदिन नन्ही राजकुमारी अधिक और अधिक समय तक बेहोशी जैसी स्थिति में खो जाने लगी।

मानो सपना देखते हुए, उसने अचानक अपनी माँ से कहा, ''जब मैं मर जाऊंगी, तुम क्या मेरी प्रिय केक मेरे खाने के लिए वेदी पर रखोगी?'' उसकी माँ चौंक गई और उसे कोई उत्तर नहीं सूझा। उसने केवल उसका हाथ पकड़ कर उसे ज़ोर से अपने साथ समेट लिया।

उसके पिता अजीब भर्राई आवाज में बोले, ''सो जाओ, सो जाओ! तुम्हें अभी अनेक वर्षो तक कुछ नहीं होगा। निराश मत हो, मेरी प्यारी बच्ची! अभी तो तुम्हें कुछ सौ चिड़ियां ही और बनानी हैं।''

नर्स ने उसे गोली दी ताकि वह सो जाए। अपनी आंखे बन्द करने से पहले नन्ही राजकुमारी ने सुनहरी चिड़िया को एक बार फिर छू कर देखा।

उसने अपनी लकड़ी की गुड़िया से चुपके से कहा, ''मैं स्वस्थ हो जाऊंगी और एक दिन मैं फिर वायु के संग दौड़ूँगी।''

डाक्टर ने उसके शरीर में रक्त चढ़ाने को कहा और इंजेक्शन तो उसे अब प्रतिदिन दिए जाने लगे थे। डाक्टर ने कहा, ''यह सच है कि इंजेक्शनों से कष्ट होता है, किन्तु हमें अपनी कोशिश जारी रखनी होगी।''

नन्ही राजकुमारी डाक्टर से सहमत थी। उसने इंजेक्शनों के विषय में

कभी शिकायत नहीं की और वह अपना दर्द छिपाने की कोशिश करती रही। उसका पीड़ा बढ़ती जा रही थी, किन्तु यह पीड़ा अन्दर ही अन्दर गहराई से उठ रही थी। यह था मरने का भय। भय और रोग, उसे इन दोनों से जूझना होगा। सुनहरी चिड़िया से उसे आशा का दामन हमेशा पकड़े रहने की प्रेरणा मिलती थी।

अब उसकी माँ अधिक से अधिक समय उसके पास बिताती थी। प्रतिदिन मध्यान्ह, नन्ही राजकुमारी अपने माँ के कदमों की बरामदे से आई सुपरिचित आवाज़ को पहचान लेती थी। हर व्यक्ति को, जो उसे मिलने आता था, प्रवेश द्वार पर विशेष चप्पलें पहननी पड़ती थीं। किन्तु इसके बावजूद भी राजकुमारी अपनी माँ के पदचापों को पहचान लेती थी। पर अपनी माँ के आकुल चेहरे को देखकर उसका मन दुःखी हो जाता था।

उसकी छोटी बहन लाल रिबन से बंधा हुआ एक बड़ा पार्सल उसके लिए लाई। नन्ही राजकुमारी ने धीरे धीरे उसकी पैकिंग हटायी और उसको खोला। उस में एक सुन्दर पोशाक रखी हुई थी जो कि उसकी माँ उसे भेंट करने के सदैव स्वप्न देखती रहती थी। अपने आंसुओं को रोकने का उसने भरसक प्रयास किया, फिर भी उन आंसुओं का खारापन आंखों को जला रहा था।

नन्ही राजकुमारी ने नरम रेशम को अपनी अंगुलियों से छूते हुए अपनी माँ से कहा, "तुमने ऐसा क्यों किया? मैं इसे कभी भी पहन नहीं पाऊंगी। और रेशम तो कितना कीमती है....."

तब उसके पिता ने कहा, "तुम्हारी माँ ने रात देर तक जाग कर इसकी सिलाई पूरी की है। इसे पहन कर देखो, इससे तुम्हारी माँ को खुशी होगी।"

बहुत ही मुश्किल से नन्हीं राजकुमारी अपने बिस्तर से बाहर निकल पाई। उसकी माँ ने पोशाक पहनने में और टाई लगाने में उसकी मदद की। राजकुमारी इतना खुश थी कि वह टांगों पर खड़ी हो गई थी। वह कुछ कदम चली फिर अपनी पहिएदार कुर्सी पर बैठ गई। सभी सहमत थे कि अपनी नई पोशाक में वह वास्तव में एक राजकुमारी लग रही थी।

उसी क्षण उसकी प्रिय सहेली, जिसने उसे अपनी पहली चिड़िया दी थी, कमरे में प्रविष्ट हुई। डाक्टर ने उसे कुछ मिनट अन्दर बिताने की आज्ञा दे दी थी। उसने नन्ही राजकुमारी को बहुत आश्चर्य से देखा और कह उठी, "इतनी सुन्दर तो तुम स्कूल की पोशाक में भी नहीं लगती थी, जितना तुम

इस पोशाक में लग रही हो।" सब खिलखिलाकर हँस पड़े, नन्ही राजकुमारी भी। उसने उत्तर में कहा, "फिर तो मैं जब अच्छी हो जाऊंगी तो हर रोज़ इसे पहन कर स्कूल जाऊंगी।"

कुछ क्षणों के लिए तो ऐसा लगा जैसे पहले घर में सब कुछ सकुशल होता था। उन्होंने हँसी मज़ाक किया और कुछ गीत भी गाए। नन्हीं राजक़ुमारी ने अपना दर्द छिपाने की कोशिश करते हुए बैठने की कोशिश की। उस दिन जब उसके माता-पिता अस्पताल से विदा हुए तो वे बड़े प्रसन्न थे। उनकी निराशा समाप्त हो गई थी और साहस लौट आया था।

सोने से पहले राजकुमारी ने एक चिड़िया और बनाई।

छ : सौ चौवालीस.......

9. हवा के साथ दौड़

जैसे ही वह निरंतर कमज़ोर होती गई, वह मृत्यु के विषय में और भी अधिक सोचने लगी। क्या वह फिर स्वर्ग-पहाड़ पर रहेगी? क्या मरते समय बहुत कष्ट होता है? अथवा क्या मृत्यु एक लम्बी नींद के समान होती है?

"क्या ही अच्छा होता मैं कुछऔर बात सोच पाती," उसने मन ही मन कहा। किन्तु यह तो वर्षा को गिरने से रोकने के तुल्य था। जब भी वह कोई और बात सोचने की चेष्टा करती मृत्यु का विचार उस पर हावी हो जाता।

अक्टूबर माह के मध्य से, नन्ही राजकुमारी बेहोश रहने लगी, और बेहोशी का दौर कई कई दिनों और रातों तक चलता। एक दिन जब वह होश में आई तो उसने अपनी माँ को अपने पास रोते हुए पाया।

उसने अपनी माँ से याचना की, "माँ रोओ मत। मत रोओ।" वह अपनी माँ से कुछ और भी कहना चाहती थी किन्तु उसके मुँह और जिह्वा लकड़ी के समान सख्त हो गए थे और वह उन्हें हिला भी नहीं पा रही थी। उसके आँसुओं में से एक उसकी माँ के कन्धे पर गिरा। उसने अपनी मां को बहुत अधिक दुख दिया था। अब उसके पास एक ही रास्ता था कि वह अधिक से अधिक काग़ज़ की चिड़ियां बनाए और उस चमत्कार की आशा करे जिसका वह कब से इन्तज़ार कर रही थी।

उसने एक काग़ज़ उठाया, किन्तु उसकी अंगुलियाँ बिल्कुल सख्त हो गई थीं। उसने अपने आप से कहा, "मैं तो अब एक चिड़िया भी नहीं बना

पा रही हूँ। मैं अब वास्तव में एक कछुआ बन गई हूं।'' नन्ही राजकुमारी ने तब तत्परता से अपनी बची-खुची सम्पूर्ण शक्ति को सँजोकर काग़ज़ के टुकड़े को एक और मोड़ देने का प्रयत्न किया और बेहोशी में लुप्त हो गई।

कुछ मिनटों के बाद, हो सकता है कुछ घंटों के बाद, डाक्टर वहां पहुँचे। उन्होंने वह काग़ज़ जो नन्ही राजकुमारी ने अपनी अंगुलियों में बड़ी सख्ती से फंसा रखा था, ले लिया। वह मुश्किल से डॉक्टर को यह कहते सुन पाई, ''अब आराम करने का समय है। तुम कल और चिड़ियां बना लेना।''

उसने अपना सिर हिलाया, ''कल...,'' वह कल तो इतना दूर प्रतीत होता था।

जब उसकी बेहोशी दूर हुई, उसका परिवार उसके इर्द-गिर्द एकत्रित था। नन्ही राजकुमारी ने मुस्कुराने की काफी कोशिश की। वह उसी परिवार की एक सदस्य थी। प्रेम के उस दायरे का वह एक भाग थी और सदैव रहेगी। कुछ भी इसे कभी भी बदल नहीं सकता था।

अब तो उसकी आंखों के पीछे रोशनियाँ झिलमिला रही थीं। नन्ही राजकुमारी ने अपना कमज़ोर हाथ एक ओर उठाया और सुनहरी चिड़िया को फिर छुआ। उसका जीवन शनैः शनैः समाप्त हो रहा था, फिर भी उसे सुनहरी चिड़िया से अपने भीतर थोड़ी सी शक्ति प्राप्त हुई थी।

उसने भाई के द्वारा डोरी में इतने धैर्य से दीवार पर लटकाई गईं उन चिड़ियों की क़तार को देखा। जैसे ही वह ध्यानपूर्वक देखती रही, पतझड़ के प्रकाश में वे चिड़ियां जीवित होती लग रही थीं। लगता था, वे खिड़की से बाहर निकल कर आकाश में उड़ जायेंगी और फिर वहां गीत गायेंगी।

ओह! वे चिड़ियां कितनी सुन्दर और स्वतंत्र थीं ! राजकुमारी बहुत दूर आकाश की ओर उनको उड़ते देखती रही।

फिर उसने अपनी आंखें बन्द कर लीं।

सदा के लिए।

एक महत्वपूर्ण बात

यह बच्चों की कहानी नहीं है। यह तो जापान के हिरोशिमा नगर में रहने वाली बच्ची के जीवन के अन्तिम महीनों का वृत्तान्त है, जिसका नाम था सदाको सुसूकी।

सदाको सुसूकी की मृत्यु रेडक्रास अस्पताल में 25 अक्टूबर 1955 को हुई थी। उसके बड़े भाई का नाम है माशीरों, छोटे भाई का नाम ईजी और बहन का नाम है मित्सुए।

रेडक्रास अस्पताल में उसका इलाज डाक्टर नुमाता ने किया था। उसके जीवन के अन्तिम क्षणों तक उसकी सेवा उसकी नर्स, कुमारी यासूनागा ने की थी। सदाको की प्रिय सहेली का नाम है चिज़ूको।

सदाको की मृत्यु से कुछ महीने पहले जिस बच्चे की रेडक्रास अस्पताल में मृत्यु हुई थी, उसका नाम था कैंजी।

6 अगस्त 1945 के दिन हिरोशिमा नगर के ऊपर जिस 'लोहे की चिड़िया' ने उड़ान भरी थी, वह था एक बी. 29 बम-वर्षक विमान।

सदाको की आंखों को जिन हज़ारों सूरजों ने चुन्धिया दिया था, वह था 6 अगस्त 1945 की प्रात: 8 बज कर 15 मिनट 43 सेकण्ड पर हिरोशिमा पर गिराये गए एक अणु बम का प्रभाव। उसं 20 किलोटन के अणु बम का विस्फोट धरती से प्राय: 580 मीटर की ऊँचाई पर शिमा अस्पताल के ऊपर हुआ था। हिरोशिमा नगर के 90,000 घरों में से 63,000 विध्वंस हो गए थे। 13 वर्ग किलो मीटर क्षेत्र खण्डहर बन गया था। लाखों लोग मारे गए या घायल हो गए थे। फिर 9 अगस्त को 11 बजकर 2 मिनट पर नागासाकी नगर पर एक दूसरा 22 किलोटन का अणुबम गिराया गया। जहां पर विस्फोट हुआ वहां का तापमान 300,000 डिगरी सेलसियस और पृथ्वी पर तापमान 3,000 डिगरी सेलसियस पहुँच गया था।

सदाको की कहानी हिरोशिमा की एक बच्ची की कहानी है, इंसान के अपने ही वहशीपन से उत्पन्न दु:ख-दर्द की कहानी है, हज़ारों स्त्री-पुरुषों

और बच्चों के मन में सदाको के लिए जागी आंतरिक सहानुभूति की कहानी है..... ।

कहानी को जारी रखते हुए

सदाको 644 काग़ज़ की चिड़ियां ही बना पाई थी। उसकी मृत्यु के उपरान्त स्कूल के उसके मित्रों ने 356 और चिड़ियां बनाईं।

हिरोशिमा में उसके शवदाह के समय उसके मृत शरीर के इर्द-गिर्द एक हज़ार चिड़ियां थी। यही उन बच्चों की सदाको के लिए अन्तिम भेंट थी, उसके नए जीवन के लिए उनकी शुभ कामनाएं थीं।

उसके दाहसंस्कार के दिन उसकी कक्षा के बच्चों ने उसकी सभी चिट्ठियों को एकत्रित कर एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया था। इस पुस्तक का नाम है "कोकेशी" जो उस गुड़िया का नाम था जो सदाको को उन्होंने भेंट में दी थी, जब वह अस्पताल में थी।

यह पुस्तक सारे जापान में शीघ्र ही काफी लोकप्रिय हुई और सब सदाको और उसकी एक हज़ार चिड़ियों की कहानी को जल्द ही जान गए।

उसके मित्र उसकी याद में और उन सब बच्चों की याद में जिनकी मृत्यु हिरोशिमा पर गिराए गए अणुबम के कारण हुई थी, एक यादगार का निर्माण करना चाहते थे। देश भर में बच्चों ने पैसा इकट्ठा करना आरम्भ किया। सदाको के मित्रों का स्वप्न उस समय पूरा हुआ जब 1958 में हिरोशिमा के शांति यादगार उद्यान (पीस मेमोरियल पार्क) में एक विशाल मूर्ति की स्थापना की गई।

ग्रेनाइट के पत्थर से बने 'स्वर्ग के पर्वत' के ऊपर एक युवा लड़की खड़ी है। वह हाथों में, सिर के ऊपर ऊंचे, चिज़ूको द्वारा दी गई सुनहरी चिड़िया से मिलती-जुलती एक चिड़िया पकड़े हुए है।

हर वर्ष 6 अगस्त के दिन उस मूर्ति पर काग़ज़ की हज़ारों चिड़ियां लटकाई जाती हैं। जो लोग वहां काग़ज़ की चिड़ियां लाते हैं वे अपनी मनोकामना की पूर्ति की इच्छा भी कर सकते हैं।

मूर्ति के पत्थर के आधार पर भी एक मनोकामना खुदी हुई है।

"यह हमारा नारा है,

यह हमारी प्रार्थना है :
विश्व में शांति हो।"

"परमाणु बम....आज हिंसा की चरम सीमा का द्योतक है।"

"स्त्री-पुरुषों और बच्चों के सामूहिक विनाश के लिए परमाणु बम के उपयोग को मैं विज्ञान का नितांत दानवी प्रयोग मानता हूँ।..........."

"...और क्या परमाणु बम ने सभी तरह की हिंसा की निरर्थकता सिद्ध नहीं कर दी?..... मुझे पूरा यकीन है कि हिंसा की इस विनाश लीला से लोग अहिंसा का पाठ सीखेंगे।"

"हम सब ईश्वर से प्रार्थना करेंगे कि वह हमें एटम बम की ज़हानियत से बचाये।"

—**'महात्मा गांधी'**

National Gandhi Museum Library's Other Publications

(1) `Birth of Free India's National Anthem; A Gift from Netaji Subhas Bose'

Dr. Y. P. Anand, p. 48, Rs. 25/-

(2) `The Essential Relationship Between Netaji Subhas Bose & Mahatma Gandhi; The Supreme Martyrs in India's Freedom Struggle'.

Compiled By Dr. Y. P. Anand, p. 47, Rs. 25/-

(3) 'गांधी जी किस प्रकार इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अन्तर्जातीय विवाह से जाति प्रथा का उन्मूलन करना होगा।'

मार्क लिन्डले, पृ. 33, मूल्य 20/-

(4) 'पीटर मेरित्सबर्ग रेलवे स्टेशन : जिसने मोहनदास करमचन्द गांधी को महात्मा गांधी बना दिया।'

पृ. 17, मूल्य 20/-

(5) 'Pietermaritzburg Railway Station : The start of the Journey from Mohandas Karamchand Gandhi to Mahatma Gandhi.'

p. 17, Rs. 20/-

(6) 'What Mahatma Gandhi Said About the Atom Bomb.' [English/Hindi]

Compiled by Dr. Y. P. Anand, p. 16, Rs. 5/-

(7) 'Little Princess and The Birds [English/Hindi], translated from French, p. 32, Rs. 20/-